www.thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंक:-५-६, नवम्बर-दिसम्बर, सन्-२०१६, सं०-२०७३ वि०, दयानंदाब्द १९२, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११७; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

आनन्द आर्य-अमृत-अभिनन्दन-अंक

आर्य समाज टाण्डा की शताब्दोत्तर रजत जयन्ती

महोत्सव बना महासम्मेलन

यज्ञ प्रवचन भजन कविताओं ने समाँ बाँधा

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ

न्यायमूर्ति श्री सज्जनसिंह कोठारी, लोकायुक्त, राजस्थान द्वारा विमोचन

(बांये से) साध्वी उत्तमा यति, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, मुख्य अतिथि जस्टिस सज्जनसिंह कोठारी, रासिंह रावत पूर्व सांसद, डॉ.ए.कुमार आईपीएस, आनन्द कुमार आर्य, डॉ.वेद प्रकाश आर्य प्रधान सम्पादक अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करते हुए

''आर्य समाज टाण्डा जनपद अम्बेडकरनगर (उ.प्र.) की शताब्दोत्तर रजत जयन्ती के अवसर पर 'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ' का विमोचन करना मेरे लिए एक सुखद अहसास है। अभिनन्दन समारोह होते ही रहते हैं, और अभिनन्दन ग्रंथ भी भेंट किये जाते हैं किन्तु एक ऐसा अभिनन्दन ग्रंथ जो अभिनन्दनीय के व्यक्तित्व का दर्पण बन सके; जिसमें वर्तमान प्रतिबिम्बित हो तथा भावी पीढ़ी मार्गदर्शन प्राप्त कर सके; दुर्लभ ही होता है। एक विश्वसनीय, प्रामाणिक, साहित्यिक मानदण्डों पर खरा उतरने वाले अभिनन्दन ग्रंथ की संरचना को सम्पादक की योग्यता और पुरुषार्थ की अपेक्षा होती है; जिसका आज के युग में प्रायः अभाव ही पाया जाता है।

'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ' का सम्यक् अवलोकन करने के पश्चात् मुझे यह कहने में हर्ष की अनुभूति हो रही है कि 'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ' ऐसी सर्वांग सुन्दर सम्पूर्ण रचना है; जिसे देखकर जहाँ हम श्री आनन्द कुमार आर्य के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से रूबरू होते हैं, वहीं पर इस ग्रंथ के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य (आर्य लोक वार्ता) की योग्यता, सम्पादन कौशल एवं पुरुषार्थ की सराहना किये बगैर नहीं रह सकते। वर्षों बाद मुझे एक ऐसे सुयोग्य सम्पादक से साक्षात्कार का सुअवसर प्राप्त हुआ है। अभिनन्दन ग्रंथ यह प्रमाणित करता है कि आर्य जगत् अपनी समस्याओं के समाधान के लिए चाहे वह 'सत्यार्थ प्रकाश' की स्मिता की रक्षा की हो अथवा सार्वदेशिक सभा के संगठन की; कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य पर भरोसा कर सकता है।''

'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ' का विमोचन करते हुए माननीय न्यायमूर्ति श्री सज्जनसिंह कोठारी, लोकायुक्त, राजस्थान, जयपुर ने उपर्युक्त उद्गार दि. १३ नवम्बर २०१६ को महोत्सव के विशाल भव्य एवं गरिमापूर्ण सभामण्डप में व्यक्त किये। अभिनन्दन ग्रंथ का विमोचन 'राष्ट्र रक्षा जागृति सम्मेलन' के तत्वावधान में किया गया।

ग्रंथ के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता, लखनऊ) ने कहा- अभिनन्दन ग्रंथ के माध्यम से श्री आनन्द कुमार आर्य की जो छवि उभरती है; वह निर्विवाद महापुरुष की है; जिसके नेतृत्व में आर्य जगत अपनी वैचारिक एवं संगठनात्मक शक्ति पुनः संगठित कर सकता है।

डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा- 'योगदर्शन प्रणेता महर्षि पतंजलि पुण्य का अभिनन्दन करने की आज्ञा देते हैं-'मुदितोपेक्षा पुण्यापुण्ययोः'- यदि पुण्य का स्वागत नहीं होगा तो समाज के विकास की गति अवरुद्ध हो जायगी। फिर जब हमारे समक्ष पुण्य की भागीरथी ही प्रवाहित हो रही हो तो उससे विमुख होना कृतघ्नता ही कही जायगी। आनन्द कुमार आर्य पुण्य की जाह्नवी की धारा के रूप में हैं; जिसके द्वारा विद्या की ज्योति प्रकाशमान है। विद्या-प्रसार द्वारा नारी समाज के अभ्युत्थान का प्रयास जो आनन्द बाबू कर रहे हैं- उससे उत्तम पुण्य कार्य और क्या हो सकता है? पर्दा प्रथा में जकड़ी हुई नारी जाति को ज्ञान और विवेक के निरभ्र आकाश में खड़ा कर देना- यह क्रान्तिकारी कार्य आनन्द बाबू द्वारा ही सम्पन्न हुआ है।

प्रधान सम्पादक ने कहा कि आधुनिक भारत की आधारशिला 'सत्यार्थ प्रकाश' महान ग्रंथ है। इस एक ग्रंथ में विश्व का मार्गदर्शन करने की तथा विश्व को आर्य बनाने की सामर्थ्य है। अगर सत्यार्थ प्रकाश नहीं होगा तो विश्व अज्ञान तिमिराच्छन्न होकर विनष्ट हो जायेगा। आज जब विधर्मियों ने नहीं किन्तु अपने कहे जाने वालों ने सत्यार्थ प्रकाश का मार्ग अवरुद्ध किया तो चिन्ता होना स्वाभाविक है। कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य ने आगे बढ़कर 'सत्यार्थ प्रकाश' की गौरव गरिमा, मान मर्यादा की रक्षा का बीड़ा उठाया तथा धर्म संस्थापक की भूमिका अदा की है।

आयोजन को सफल बनाने का अधिकांश श्रेय मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज की प्रिंसिपल डॉ.प्रशिषा श्रीवास्तव तथा डी.ए.वी.एकेडमी की प्रिंसिपल श्रीमती अनीता सिंह को जाता है जिन्होंने शिक्षक मण्डल के साथ समारोह को सफल बनाने का अहर्निश उद्योग किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रख्यात विद्वान् डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, सम्पादक 'वैदिक पथ' हिण्डौन कर रहे थे। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, दिल्ली, स्वामी आर्यवेश प्रधान सार्वदेशिक सभा, आचार्य अंशुदेव झारखण्ड, रमेन्द्र कुमार गुप्त पटना, सारस्वत मोहन 'मनीषी', आचार्य सोमदेव शास्त्री मुम्बई, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय दिल्ली, पं.दीनानाथ शास्त्री, आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, विनय आर्य दिल्ली, पं.सत्यपाल पथिक, कैलाश 'कर्मठ', सुखदेव तपस्वी, सत्यप्रकाश आर्य, डॉ.शैलेन्द्र कपूर की भागीदारी महोत्सव में चार चाँद लगा रही थी।

१० नवम्बर से १४ नवम्बर २०१६ तक चलने वाले महोत्सव में आर्ष सिद्धांत सम्मेलन, वेद विज्ञान सम्मेलन, नारी सशक्तीकरण सम्मेलन, युवा जागृति सम्मेलन, बाल विकास एवं स्वच्छता अभियान सम्मेलन, कवि सम्मेलन तथा शंका समाधान के कार्यक्रम आयोजित किये गये। आर्य वीरांगना दल द्वारा शौर्य प्रदर्शन का कार्यक्रम अत्यंत रोचक और उत्साहवर्द्धक रहा।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

सम्भवामि युगे युगे

एक पीढ़ी के श्रेष्ठ संस्कार कैसे अगली पीढ़ी में रूपान्तरित होते हैं; इसका मिश्रीलाल आर्य और आनन्द कुमार आर्य से बढ़कर उत्तम उदाहरण कहाँ मिलेगा? आनन्द बाबू अथर्ववेद (३.३०.२) में प्रयुक्त 'अनुव्रती' शब्द की सुन्दर व्याख्या हैं। 'व्रती' के साथ संलग्न 'अनु' उपसर्ग के बारे में महर्षि दयानन्द ने कहा है कि जैसा श्रेष्ठ व्यवहार पुत्र का पिता के साथ हो, वैसा ही श्रेष्ठ व्यवहार पिता का पुत्र के प्रति हो। आनन्द बाबू ने अपने पिता की इच्छा के अनुसार उनकी संस्थाओं का कार्यभार ही नहीं, उनकी आध्यात्मिक विरासत को भी दक्षता पूर्वक संभाला। आनन्द बाबू के अनुसार- "नित्य प्रति प्रातः यज्ञ करने का नियम पालन करने वाले पिता श्री मिश्रीलाल आर्य ने अपने वार्धक्य के कारण उत्पन्न शारीरिक शिथिलता को लक्ष्य करके एक दिन कहा-"प्रिय पुत्र, आज तक मैंने दैनिक अग्निहोत्र का निर्वाध रूप में पालन किया है किन्तु अब मेरी इन्द्रियाँ साथ नहीं दे रही हैं। क्या तुम अब इस गुरुभार को सँभालने को उद्यत हो?" आनन्द बाबू ने पिता को पूर्ण आश्वासन ही नहीं दिया वरन् अगले दिन से ही दैनिक यज्ञ अपनी जीवन साधना में समाहित कर लिया।

विद्वानों ने धरती पर सुखविशेष (स्वर्ग) के रूप में जिस आर्य परिवार की कल्पना की है; उसे आनन्द-परिवार में रूपायित होते देख सकते हैं। जहाँ परिवार के सभी सदस्य 'सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा' की वैदिक परम्परा को साकार रूप दे रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि आनन्द बाबू अपने नाम के समक्ष 'आर्य' शब्द का अविरल प्रयोग करते हैं, जो समस्त जाति, वर्ण, वर्ग, सम्प्रदाय भेद से ऊपर है। आज आर्य परिवारों में आर्यत्व की गौरव गरिमा, आर्यावर्त, आर्यजाति, आर्यपुत्र के प्रतीक 'आर्य' शब्द का प्रयोग विरल होता जा रहा है, आनन्द कुमार की अविचल आर्य निष्ठा- इस सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करती है। आनन्द के पिता श्री मिश्रीलाल जी, आनन्द बाबू, उनके सभी पुत्र, पुत्रियाँ, पौत्र इत्यादि आर्य परम्परा के संवाहक हैं और कलियुग में त्रेता का दृश्य मूर्तिमान करते हैं। इस आर्य परिवार का 'आर्यत्व' के प्रति समर्पण देखकर अनायास ही हम श्रद्धा से अभिभूत हो जाते हैं।

आनन्द बाबू अपने आप में एक संस्था हैं। श्वेत खादी परिधान- कुर्ता, पाजामा, सदरी, पैरों में चप्पल और आँखों में चश्मे के मध्य आनन्द जी का गौर व्यक्तित्व निखर उठता है और अस्सी वर्ष की आयु में भी उत्साह, ऊर्जा समन्वित वे युवक ही मालूम देते हैं। आज आनन्द बाबू ही आर्य जगत के ऐसे व्यक्ति हैं, जिनसे आशीर्वाद, स्नेह, सम्मान, आदर, प्रोत्साहन, श्रद्धा प्राप्तकर आर्य जगत के अनेक विद्वानों को समाज में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। पं.दीनानाथ शास्त्री, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. अशोक आर्य (उदयपुर), सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक (बाराबंकी) इत्यादि अनेक ख्यातलब्ध नाम लिये जा सकते हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी बराबर आनन्द जी का स्नेह और विश्वास प्राप्त होता रहा है। आनन्द जी के जो प्रतिकूल रहते हैं, उनके प्रति भी उनका व्यवहार मधुर, निष्कपट, सरल ही रहता है, वे कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते हैं। वे निश्चित ही आर्य जगत की एक महत्वपूर्ण धरोहर अथवा रत्नराशि के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। आनन्द जी कहते हैं- मतभेद भले हो, मनभेद नहीं होना चाहिए।

महाकवि माघ कृत 'शिशुपाल वध' काव्य में युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को 'ऊढ़गुरुभार' अर्थात् 'हे भारी भार सँभालने वाले' कह कर सम्बोधित किया है। यह श्रीकृष्ण की विषम से विषम परिस्थितियों पर भी विजय प्राप्त करने की सामर्थ्य का व्यंजक है। कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य ने भी विषम परिस्थितियों का डटकर सामना किया और धर्म की संस्थापना में अपना अहम रोल अदा किया है। संयोगवश वर्तमान कालखण्ड में कई आर्य विद्वानों ने कुछ विद्या के दंभ और कुछ उत्साह के अतिरेक के कारण महर्षि दयानन्द की मान्यताओं को ही संशोधित और खंडित करने का उपक्रम करना आरम्भ किया। यहाँ तक कि महर्षि के क्रान्तिकारी विश्वजयी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' को भी अल्पज्ञताजन्य अहम्मन्यता ने अपने आवरण में लपेट लिया, वे इतना आगे बढ़ गये कि कुछ वर्ष पूर्व हरियाणा के धर्मगुरु रतिराम को 'सत्यार्थ प्रकाश हत्याकांड का भंडाफोड़' नामक पुस्तक लिखनी पड़ गयी जिसमें अहंकारी विद्वानों की सत्यार्थ प्रकाश के प्रति दुरभिसंधियों का उद्घाटन किया गया था। इधर एक नया शगूफा यह कि 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रथम संस्करण प्रकाशित कर दिया; जो नितान्त अवांछित और महर्षि की आज्ञा, इच्छा और अनुमति के सर्वथा विपरीत, एक दिग्भ्रमित करने वाला कार्य था। क्योंकि अद्यतन सर्वमान्य द्वितीय संस्करण तो आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट जैसे प्रकाशन संस्थान प्रामाणिकता से प्रकाशित करते ही आ रहे थे। प्रथम संस्कारण के पीछे कुछ निहित स्वार्थवाले विद्वान् रहे होंगे। धूलधूसरित होती हुई मान मर्यादा और स्मिता की रक्षा का सवाल था। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण की प्रतिष्ठा बनाये रखने, सत्यार्थ प्रकाश की खंडित होती मानमर्यादा, प्रतिष्ठा, गौरवगरिमा की रक्षा करने हेतु तथा षडयन्त्रकारियों की खल-कामनाओं को विफल करने का आर्य जगत में जिस मान्य व्यक्ति ने बीड़ा उठाया- वह थे 'आनन्द कुमार आर्य'। आनन्द बाबू को इस कार्य में सफलता भी मिली और उन्होंने 'ऊढ़गुरुभार' भारी भार सँभालने वाले श्रीकृष्ण को मिले सम्बोधन के अनुरूप अपने जीवनोद्देश्य को पूर्णता प्रदान की। 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसे महान गौरवपूर्ण और राष्ट्रीय ऐक्य एवं विश्व बन्धुत्व के नियामक ग्रंथ की मर्यादा और प्रतिष्ठा की रक्षा करना 'धर्म संस्थापना' से कम नहीं है। अतः कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य- 'धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे'- श्रीमद्भगवद्गीता की इस उक्ति को वर्तमान कालखण्ड में सार्थकता प्रदान करते हैं।

मेरी जीवन यात्रा का प्रथम चरण

संघर्ष और विजय की आत्मकथा

-आनन्द कुमार आर्य

(जीवन यात्रा के उतार चढ़ाव, संघर्ष और विजय की यह रोचक, प्रेरक एवं रोमांचकारी आत्मकथा– आनन्द बाबू को एक मंजे हुए लेखक के रूप में स्थापित करती है। –सं.)

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' जन्म देने वाली माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है, उस पवित्र सलिला 'सरयू' के पावन तट पर अवस्थित 'टाण्डा' में ६ नवम्बर १९३६ ई. को मेरा जन्म हुआ। मेरे पूज्य पिताश्री का नाम आर्य समाज के पथ प्रदर्शकों की अग्रिम पंक्ति में अंकित महाशय मिश्रीलाल आर्य और माता श्रीमती रामप्यारी देवी था। मैं उसे परमात्मा की कृपा ही मानता हूँ कि उसने मुझे ऐसे परिवार में जन्म दिया, जिसमें सत्य-निष्ठा, न्याय, ईमान, ईश्वर में विश्वास, देशभक्ति सबकुछ था। परिवार सम्पन्न था, सादगी थी, उच्चविचार थे, उस माहौल में पला, शिशु से बालक हो गया, पाँच वर्ष की उम्र में 'आर्य विद्यालय' में प्रवेश करा दिया गया और मैं बस्ता (बैग) लेकर स्कूल जाने लगा। मुझे स्मरण है कि एक धोती, कुरताधारी, सिर पर टोपी लगाये श्री रामकुमार जी मेरे प्रथम गुरु थे, मैं उनका ऋणी हूँ, उनसे ग्रहण की हुई शिक्षा मेरे व्यक्तित्व विकास का आधार व कुंजी है।

प्रसंगवश उल्लेख कर दूँ कि मैं बाल्यावस्था से लगभग १५ वर्ष की आयु तक शरीर से कमजोर था जिससे स्वाभाविक था कि मेरी अम्मा (माता) जी मेरा विशेष ध्यान देतीं- मेरे लिये मेरे पसन्द का कुछ-कुछ बनाती तो संयुक्त बड़े परिवार में कानाफूसी होती लेकिन वह उसकी परवाह नहीं करतीं- विशेषकर मैं महीन चावल बासमती ही खाता, वह मेरे लिये बनातीं और चुपके से मुझे खिलातीं। ऐसा वात्सल्य तो सिर्फ माँ ही दे सकती है और कोई नहीं। घर के विक्षुब्ध लोगों ने मेरा उप-नाम महीनबाबू ही रख दिया था, वैसे घर का नाम 'नन्दू' था। मेरे चाचा स्व.श्री हीरालाल जी कहते थे कि नन्दू मुंह में सोने का चम्मच लेकर पैदा हुआ है। इससे आप समझ जायेंगे कि बचपन से ही मुझे किस तरह का लाड़प्यार प्राप्त होता रहा।

स्कूल में आहिस्ता-आहिस्ता पढ़ाई में मन लगने लगा, कक्षा १ से ५ तक की शिक्षा प्राप्त कर ली, फिर कक्षा ६ में होवर्ट इन्टर कॉलेज में मेरा दाखिला कराया गया, जो घर से एक मील की दूरी पर अवस्थित था, मेरा परिवार रईस था, व्यवसाय में कार्यरत सेवकगणों की ड्यूटी पिताजी ने लगा दी थी वे मुझे साइकिल से पहुँचा देते और छुट्टी होने पर घर लाते, यह क्रम कक्षा ८ तक चलता रहा फिर स्वयं पैदल जाने-आने का मार्ग प्रशस्त हुआ और सन् १९५३ में मैंने इन्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

पूज्य पिता जी से प्राप्त तथा स्वजनित संस्कार से नेतृत्व करने की लालसा रंग लायी और कॉलेज के प्रथम गठित छात्रसंघ के निर्वाचन में मैं 'अनुशासन मंत्री' पद के लिये प्रत्याशी हो गया और १४ वोटों से विजयी हुआ। आप कहेंगे कि अध्यक्ष और महामंत्री पद को छोड़कर अनुशासन के पद को क्यों चुना, तो उत्तर स्वाभाविक है कि मेरे दादा स्व.श्री गयाप्रसाद, पिताश्री स्व. मिश्रीलाल के गुण और स्वभाव ही तो मेरे में निहित थे फलस्वरूप मेरा अनुशासन प्रिय होना स्वाभाविक था, इसके अतिरिक्त हमलोग भाग्यशाली थे कि हमें 'पं.देवी प्रसाद मिश्र' जैसा प्रिंसिपल मिला था, जिन्हें आज भी बहुत श्रद्धा से स्मरण किया जाता है जो अवकाशमुक्त होने पर त्रिलोकनाथ डिग्री कॉलेज के भी प्रिंसिपल तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा में विधायक रहे। मुझे उनका व्यक्तिगत स्नेह व आशीर्वाद प्राप्त था, इन संस्मरणों को स्मरण ही किया जा सकता है, वर्णन करने के लिये शब्द बने ही नहीं। तो हाँ मैं अनुशासन मंत्री निर्वाचित हो गया, अपने सहपाठियों, छात्रों को उस समय आवश्यक अनुशासन में लाना टेढ़ी खीर थी किन्तु दादा और पिता से प्राप्त आत्मबल से घबड़ाया नहीं, डरा नहीं, पद की गरिमा पर खरा उतरा और छात्रसंघ गठन के प्रथम वर्ष प्रथम स्थान पर रहा। मेरे छात्र मित्रों में श्री हरिनारायण कपूर, श्री बालगोविन्द कपूर, श्री विष्णुचन्द, श्री भूपेन्द्र मेहरोत्रा प्रमुख थे जिनमें श्री बालगोविन्द तथा श्री विष्णुचन्द का निधन असमय में हो गया जो मेरी व्यक्तिगत अपूरणीय क्षति है। श्री हरिनारायण कपूर टाण्डा से बाहर रहते हैं, श्री मेहरोत्रा जी का सान्निध्य प्राप्त है और कंधा से कंधा मिलाकर पूर्ण रूपेण मुझे संभालते रहते हैं- धन्यवाद के पूर्ण अधिकारी हैं किन्तु धन्यवाद कैसा वह तो मित्र है।

टाण्डा से इन्टरमीडिएट करके बी. ए. अध्ययन करने के लिये लखनऊ विश्वविद्यालय में दाखिल हो गया, वटलर छात्रावास में रहने का स्थान मिला, जैसा कि स्वाभाविक है कि घर छोड़कर दूर रहने का प्रथम प्रयास था किन्तु कुछ दिनों बाद अभ्यस्त हो गया, वहाँ कुछ मित्र हो गये जिनमें श्री कृष्णमुरारी श्रीवास्तव, एडवोकेट (बस्ती) तथा श्री सुरेश नारायण सेठ एडवोकेट (गोंडा) आज भी मित्रभाव से सम्पर्क में हैं। नेतृत्व की उत्कंठा से उद्वेलित छात्रावास में कैंटीन प्रमुख होकर छात्रों को उत्तम भोजन का प्रबन्ध कराना तथा छात्रावास के रखरखाव की सुविधा प्राप्त कराने से छात्रों ने विश्वविद्यालय में सोहरत कर दी और उस वक्त के प्रसिद्ध छात्रनेता श्री जगदीश गांधी (लखनऊ) से मुलाकात हो गयी, वह छात्रसंघ के अध्यक्ष रहे आज वह शिक्षाविद् के रूप में पूरे देश में जाने जाते हैं। अन्ततोगत्वा बी.ए. द्वितीय वर्ष में मैंने विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव में भाग लिया और उसी 'अनुशासन मंत्री' के पद की चुनाव स्पर्धा में भाग लेकर ३८ वोटों से विजयी हुआ, वर्तमान में तो अनुशासन मंत्री का पद ही समाप्त कर दिया गया है जिसका परिणाम छात्रों में अनुशासनहीनता तथा अनेक दुर्गुणों का प्रविष्ट होना है।

हाँ, संक्षेप में अब आप मेरी दिनचर्या को भी थोड़ा जान लें जो आज के समय में भी सामयिक है, जबसे थोड़ी समझ आने लगी थी, लगभग ४-५ वर्ष की उम्र होगी, स्मरण है कि पिता जी आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में ले जाते थे, आर्य पर्वों पर, वार्षिकोत्सव (जलसों) पर एक नई उमंग, खुशी सी होती, विद्वान्, संन्यासी बड़ी कठिनाई से टाण्डा पहुँचते (क्योंकि उस समय आवागमन का साधन बहुत कम था, सबसे कठिनाई अकबरपुर से टाण्डा आने की थी केवल इक्का (घोड़े की सवारी) उपलब्ध था। उस समय के अनुसार उन्हें ठहराने की, भोजन की उत्तम व्यवस्था

होती, जलपान की व्यवस्था घर से ही होती थी जिसके लिये माता जी हफ्तों से लगी रहतीं, मीठे में बेशन-मूंग के लड्डू, मेवा डालकर आंटे की कतली, नमकीन में दालमोठ, खुरमा, कचरी (सकरपाण्डा) बनाती, सुबह-सुबह हलुआ बनता, घर में गौवें रहतीं उनका दूध लेकर आर्य समाज मंदिर तथा बगल में अपने मकान में जहाँ विद्वान्, अतिथिगण ठहरते घर के सेवकों के साथ मैं भी जाता, और क्या बताऊँ कि संन्यासी-विद्वानों को जलपान, तथा भोजन कराने में कितना आनन्द (मजा) आता था। उसका वर्णन नहीं कर पा रहा हूँ और कालान्तर में यह मेरे जीवन का शौक बन गया और मैं आज भी अपने इस शौक को पूरा करता हूँ, सभी विद्वान्जनों, अतिथियों को भोजन कराने के पश्चात् ही बड़े आनन्द से भोजन करता हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि बाल्यावस्था में ग्रहण किये हुए संस्कार से कभी पृथक् नहीं हुआ, लखनऊ अध्ययन की अवधि में भी आर्य समाज के सत्संगों-उत्सवों में भाग लेना, विद्वानों, आर्य नेताओं से सम्पर्क करना नहीं छोड़ा। भाग्यशाली हूँ कि आर्य समाज के संन्यासी महात्मा, विद्वानों का भरपूर आशीर्वाद मुझे आज भी प्राप्त है। खान-पान का बहुत शौक परिवार से मिला, खासतौर से खिलाकर खाने का आनन्द ही और है और वह मेरे जीवन का अंग बन चुका है- स्वास्थ्य के लिये लाभदायक फल और दूध का नियमित सेवन मेरे आज की भी दिनचर्या में है।

यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है कि लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रावास काल में पिताजी के अनेक पत्र मेरे पास पहुंचे थे जो नैतिक शिक्षा से लेकर कर्तव्यबोध, देश की परिस्थिति के वर्णन, साथ में सिनेमा आदि न देखने की सुशिक्षा से परिपूर्ण होते थे। काश! मैं उन पत्रों को संजोकर रखे होता और उसे इस समय प्रकाशित करता जिससे भावी सन्तानों को बोध होता कि एक सुयोग्य पिता अपनी संतान के भावी जीवन के प्रति किस हद तक चिन्तन करता है-

परिवार का साड़ियों का व्यापार अच्छी ऊँचाई पर था, टाण्डा से जाकर कलकत्ता में और वहाँ से मऊनाथभंजन तथा सालेम (दक्षिण भारत) में दूकानें खुल गयी थीं। पिता जी आर्य समाज, विद्यालय का कार्य देखते हुए टाण्डा दूकान और इनकमटैक्स का दायित्व संभालते टाण्डा में ही रहते थे। हमारे चाचा श्री हीरालाल जी कलकत्ता और टाण्डा आते जाते रहते थे। व्यवसाय में सहयोगी की नितान्त आवश्यकता थी, जिसके लिए सबकी निगाह मेरे ऊपर थी- मैं भी समझता था कि मुझे और आगे अध्ययन का अवसर नहीं प्राप्त होगा। मुझे बी.ए. की परीक्षा देने के साथ ही सन् १९५५ में कलकत्ता भेज दिया गया और मैं पूरी तन्मयता के साथ व्यापार में जुट गया। •••

www.thearyasamaj.org

जिनसे स्नेहशीलता तथा अन्तरंगता की अकूत सम्पदा प्राप्त हुई

-डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री

सम्माननीय स्नेहमूर्ति आनन्द बाबूजी की अस्सी वर्ष (८० वर्ष) की सम्पूर्त्ति के अवसर पर प्रकाशित हो रहे 'आनन्दार्यामृताभिनन्दनम्' के लिए इसके सम्पादक आदरणीय डॉ. वेद प्रकाश आर्य जी का पत्र मिला, जिसमें उनसे सम्बन्धित संस्मरण अथवा सम्प्रेरक वचन लिखने का आदेश था। मैं बहुत दिनों तक यह निर्णय ही नहीं कर सका कि इस सम्बन्ध में मैं क्या लिखूँ? वस्तुतः प्रगाढ़ता और समीपता की स्थिति में व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है।

आनन्द बाबू जी से मेरा प्रथम परिचय आर्य समाज विधानसरणि या बड़ा बाजार कलकत्ता के वार्षिकोत्सव पर १९८४-८५ के वर्षों में हुआ था। प्रथम परिचय में ही आत्मीयता की अनुभूति हुई। उन्हें मेरा निवास अमेठी जानकर मेरे प्रति रुचि और जिज्ञासा जगी जो धीरे-धीरे एक दो वर्षों में पारिवारिक सदस्य के रूप में परिणत हुई। उसके बाद टाण्डा के उत्सव में जब बाबूजी (माननीय प्रधान श्री मिश्रीलाल जी) ने उन्हें यह बताया कि मैं मूलतः चम्पारण जिले के मुख्य शहर मोतीहारी के निकट का रहने वाला हूँ तब वे मुझे ननिहाल का जानकर और अधिक हर्षित हुए। मैं यह स्वयं नहीं समझ सका कि आनन्द बाबू मुझे इतना अधिक मान-सम्मान-स्नेह-विश्वास क्यों देते हैं? महाकवि भवभूति ने लिखा है-

व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतुः।
न खलु बहिरुपाधीन् प्रीतयः संश्रयन्ते।।

अर्थात्-किसी का किसी से सच्चा प्रेम या अनन्यता का कोई बाहरी कारण नहीं होता, वह अन्तस् का ही कोई हेतु होता है जिससे किसी का किसी से आभ्यान्तरिक लगाव हो जाता है।

विगत ३० वर्षों से भी अधिक समय से सैकड़ों बार आनन्द बाबू जी से भेंट हुई है, विचार विमर्श हुआ है, कार्यक्रम बने हैं, व्याख्यान हुआ हे, संयोजन, लेखन, गोष्ठी, यज्ञ, संस्कार आदि सभी आयोजन आर्य समाज की परिधि में वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर आधारित रहे हैं व्यक्तिगत समारोह हो या सामाजिक अनुष्ठान, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक वैचारिक विमर्श या सैद्धान्तिक वादों पर चर्चा-परिचर्चा। सभी अवसरों पर प्रधान जी का मेरे प्रति अटूट विश्वास, मैं नहीं जानता कि यह सम्बन्ध केवल इसी जन्म के व्यवहारों से उपजा है या पूर्वजन्म के प्राक्तन संस्कारों का भी इसमें योग है? एक-एक घटनाओं का विवरण देने लगूँ तो एक पुस्तक बन जायेगी। अतः संक्षेपतः कतिपय बिन्दुओं की चर्चा करके विराम लूँगा।

(क) सम्भ्रान्त कुलीनता–

महात्मा विदुर ने अपनी नीति में सज्जनों का आवश्यक गुण कौल्यम् कुलीनता कहा है। और यह कुलीनता इनमें कूट कूट कर भरी हुई है। इन्होंने हमेशा सद्व्यवहार तथा सज्जनोचित आचार का ध्यान रखा है। एक रईस परिवार में जन्म लिया, रईसी के साथ जिन्दगी जी किन्तु उच्च विचारों के साथ। कभी किसी से ओछी बात नहीं की।

(ख) विद्वानों तथा संन्यासियों का सम्मान–

मुझे सम्पूर्ण आर्य जगत् में इनसे अधिक विद्वानों का सम्मान करने वाला नहीं दिखलाई पड़ता। अपने दोनों पुत्रों तथा दोनों पुत्रियों के विवाह संस्कार में इन्होंने दशाधिक विद्वानों को निमंत्रित किया। गृह-प्रवेश का कार्यक्रम हो या जन्मदिवस पर आयोजित यज्ञ। प्रत्येक कार्यक्रम में दस-बीस विद्वान्, भजनोपदेशक सादर बुलाये जाते। सुरुचिपूर्ण भोजन, मार्गव्यय सहित परिपूर्ण दक्षिणा (द्रव्य-वस्त्रादि) से सत्कार करना। आर्य जगत में आनन्द जी से सम्पन्न हजारों लोग हैं सैकड़ों आर्य नेता हैं, किन्तु इन जैसा विद्वज्जनानुरागी और सत्कार प्रेमी कोई नहीं।

(ग) आर्यत्व से अभिसिंचित परिवार–

आनन्द जी को आर्यत्व से परिपूर्ण जैसे माता पिता मिले वैसे आर्यत्व से आप्लावित बेटे-बेटियाँ पौत्र और पौत्रियाँ। सभी पुत्र-पौत्र आज्ञाकारी, संस्कारी, यज्ञ और आर्य समाज से प्रेम रखने वाले। इनके एक नाती का नाम 'हरिदश्व' है ये पूर्णतः वैदिक नाम है और जहाँ तक मेरी जानकारी है इस नाम का कोई अन्य बालक नहीं है। आनन्द जी के दोनों बेटे तथा दोनों बेटियाँ, आत्मानुशासन के पालक कठोर परिश्रमी और स्वावलम्बी हैं। सम्मान्या भाभी जी यदि आनन्द बाबू जी के समान ही सहृदया तथा उदारधीः नहीं होतीं तो आनन्द बाबू न तो इतनी ऊँचाई पर पहुँचते और न अपने जीवन में सफलतम व्यक्ति होते। मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि उनके परिवार के सभी सदस्य आदर-सम्मान और स्नेह से मुझे आच्छादित कर देते हैं।

(घ) कार्य ही बोलता है–

आनन्द जी ने अपने आर्य-जीवन में अनेक कार्य किये हैं जो अत्यन्त ही कठिनाइयों से भरे थे, संघर्षशीलता, कुशलता, कार्यक्षमता और अपनी योग्यता से वे सब कार्यों को सम्पन्न कर सके।

(१) श्री मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कॉलेज, डी.ए.वी.एकेडमी और आर्य समाज टाण्डा का सर्वविध विकास तथा सफलता के उच्चतम शिखर पर आरोहण।

(२) आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का भव्य भवन, अनेक गतिविधियों का संचालन, 'आर्य विचार' नाम मासिक द्विभाषी (हिन्दी-बंगला) पत्रिका का संचालन।

(३) कलकत्ता महानगर से आर्य समाज बड़ाबाजार की भूमि को कब्जा करने वालों से खाली करवाने का दुष्कर कार्य। जिस भूमि पर आज भव्य भवन बनकर खड़ा है तथा अनेक आर्य सामाजिक गतिविधियों का आश्रय है।

(४) आर्य समाज भवानीपुर का १६ बीघा जमीन ६१ नं. डाइमण्ड हार्वर रोड पर था, जिस पर गुण्डे काबिज थे, अपनी जान को जोखिम में डालकर आनन्द बाबू ने उसे हासिल किया तथा डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल की स्थापना कराई।

(५) बंगाल में तथा टाण्डा में बीसियों बड़े-बड़े सम्मेलन, समारोह आदि भव्यता तथा सुगढ़ता से आयोजित हुए तथा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए।

किम्बहुना- आनन्द बाबू जी द्वारा किये गये कार्यों की फेहरिश्त लम्बी है। मुझे प्रसन्नता है कि आज से २५ वर्ष पूर्व मैंने जो लिखा था वह अक्षरशः चरितार्थ हुआ है- "बाबू जी (श्री मिश्रीलाल आर्य) के निधन के बाद उनके सुयोग्य पुत्र आनन्द बाबू ने अपने मजबूत कन्धे पर टाण्डा आर्य समाज का नेतृत्व और आर्य कन्या पाठशाला का संचालन भार सम्भाला है। आनन्द बाबू के अन्दर भी आर्य समाज के प्रति अनन्य प्रेम अपने स्वर्गीय पिता के समान ही कूट-कूट कर भरा है। बाबू जी को भी इनके ऊपर अनन्य विश्वास था और वे प्रायः कहा करते कि मुझे इस बात का जीवन की अन्तिम घड़ी में सन्तोष और विश्वास है कि मेरे न रहने पर भी आनन्द जी सारा कार्य सम्भाल लेंगे और मुझसे भी ज्यादा योग्यता से कार्य करेंगे। आज के युग में एक आर्य पिता के परिवार में पूर्ण आर्यत्व और उसके बाद भी आर्यत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का दृढ़ विश्वास एक सच्चे आर्य के सार्थक जीवन का इससे बढ़कर उदाहरण क्या होगा?" ('जीवन ज्योति', पृ.१२६)

आनन्द बाबू पर श्री भर्तृहरि महाराज की यह उक्ति पूर्णतः चरितार्थ होती है- 'निजहृदि विकसन्तः इति सन्तः कियन्तः।'

माननीय प्रधान जी (श्री आनन्द बाबू जी) अपने जीवन के ८० वसन्त पूरे कर रहे हैं। इस अवसर पर परमेश प्रभु से यही प्रार्थना है-

जीवन्तु शरदः शतं वर्धमाना भवन्तः।

-प्रधान सम्पादक-वैदिक पथ हिण्डौन सिटी, (राज.)

वैवाहिक स्वर्णिम जयन्ती : स्वयं की अभिव्यक्ति

-भूपेन्द्र नाथ मेहरोत्रा

श्री आनन्द कुमार आर्य उस दीपक के समान हैं जो अपने अस्तित्व की परवाह किये बिना अपनी ऊर्जा को सामाजिक सत्य एवं शिक्षा को उजागर करने में लगा रहे हैं। मैंने ऐसे मधुर स्वभाव के धनी, शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र की विशिष्ट विभूति श्री आनन्द कुमार आर्य के विषय में दो शब्द लिखने का प्रयास किया है।

जिन्दगी की वास्तविक समझ, अनुभव और सुन्दर विचारों से पैदा होती है। स्वर्गीय पिता बाबू श्री मिश्रीलाल आर्य ने इनकी क्षमता का समुचित आकलन कर लिया था। सभी सामाजिक, पारिवारिक कार्यों के संचालन का दायित्व 'आनन्द जी' को छोटे से उम्र में ही सौंप दिया। उसी समय आनन्द जी ने भी अनुभव किया कि जीवन में अनुभव के बगैर न तो हम बेहतर जिन्दगी जी सकते हैं और न ही अन्दर समाई क्षमताओं का परिचय पा सकते हैं। पूज्य बाबू जी ने आर्य समाज टाण्डा व आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय टाण्डा के प्रबन्धन का कार्य अपने समय में ही इनको दे डाला।

परिस्थितियों के सही नियोजन से 'विकास' की ऐसी अविरल धारा प्रस्फुटित हुई कि अपनी 'प्रतिभा' से श्रेष्ठ और नवीन बनाने के लिए सतत् अवसर तलाशते रहे जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण सामने है। आनन्द जी राष्ट्रीय स्तर पर आर्य समाज के नेताओं में पहचाने गये। आपने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली व आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के नायक के रूप में नेतृत्व किया। टाण्डा की महती आवश्यकता का अनुभव करके इण्टरमीडिएट तक का एक विद्यालाय डी. ए.वी.एकेडमी टाण्डा (अंग्रेजी माध्यम) स्थापित किया। आनन्द जी अपेन उत्तरदायत्वि के निर्वाह को पूर्ण करने में भीष्म पितामह की भूमिका निभा रहे हैं। उपरोक्त विद्यालयों से मुझे भी माँ सरस्वती की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ।

भाई आनन्द जी में कठिन से कठिन एवं जटिल समस्याओं का बड़े ही सरल ढंग से समाधान कर लेने की अद्भुत क्षमता है। किसी भी बड़े आयोजन में वे बड़े सुलझे ढंग से अन्य लोगों को अलग-अलग जिम्मेदारी बांट देते हैं। इसके फलस्वरूप कार्यक्रम तो सफल होता ही है और वे सभी लोगों का विश्वास, उनका सक्रिय सहयोग व आदर-भाव अर्जित करने में सफल होते हैं। यह गुण उन्हें एक श्रेष्ठ प्रशासक के रूप में स्थापित करता है।

सभी का हाल-चाल पूछना, उनके निजी सामाजिक समस्याओं से स्वयं को जोड़कर, उनके संग चिन्तापूर्वक जूझना उनके व्यक्तित्व का मानवीय गुण है। प्रयास करके भी कोई असाधारण नहीं बन पाता। जीवन में संचित संस्कार, अर्जित विश्वास, सेवा भावना, अटूट सम्पर्क तथा आध्यात्मिकता के रस में सराबोर व्यक्ति अनायास ही साधारण से असाधारण बन जाता है। इन्होंने हमेशा मुझे एक मित्र के अतिरिक्त अपना बड़ा भाई माना है। मैं अपने परिवार की तरफ से ८० वर्षीय श्री आनन्द कुमार आर्य की दीर्घायु की होने की शुभकामनायें करता हूँ।

मैं अपने जीवन के ५०वें वैवाहिक वर्षगाँठ के उस क्षण को भूल नहीं सकता जब आनन्द जी के प्रबन्धन में अचानक 'हवन' का आयोजन लखनऊ में इस अभिनन्दन ग्रंथ के मुख्य सम्पादक डॉ. वेद प्रकाश आर्य द्वारा वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। मैं हृदय से डॉ. वेद प्रकाश आर्य का आभारी हूँ। हमारे पूरे परिवार ने उन्हें अत्यधिक सराहा। डॉक्टर साहब ने अपने अभिनन्दन ग्रन्थ को प्रकाशित कर आर्य जगत् के पुरोधाओं में एक जागृति पैदा कर दी है। हम परम ब्रह्म परमेश्वर से अभिनन्दन ग्रन्थ की सफलता की कामना करते हैं।

-हयातगंज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर

एक सार्थक व्यक्तित्व

-आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

जिस अभिनन्दनीय व्यक्तित्व के सम्बन्ध में लिखने को समुद्यत हुआ हूँ, वह एक सारगर्भित जीवन है जिसमें जो जितना प्रवेश आपने सामर्थ्य से कर सकेगा, उतना ही वह कई विज्ञानमय रूपों का प्रकाश अधिगमन कर सकेगा। मनुष्य अपने विचारों को प्रगट करने के लिए केवल शब्दाश्रयी नहीं होता, मात्र शब्द उसके भावों को व्यक्त नहीं करते। प्रायः शब्द उसकी भाषा न बनकर केवल गूँगे की भाव भंगियों के समान चेष्टा मात्र रह जाते हैं। उनसे उनके भावों का संकेत मात्र मिल सकता है, विचारों की अभिव्यक्ति नहीं मिलती। ये विचार जितने महत्त्वपूर्ण होंगे, उतनी ही यह संभावना होगी कि शब्दों द्वारा उन्हें अभिव्यक्त या प्रगट नहीं किया जा सकेगा। इस अभिव्यक्ति के लिए उन शब्दों को उस व्यक्तित्व की जीवन छाया में देखना पड़ेगा। जीवन की संगति में सच्चा अर्थ जानना होगा। शब्दों के कोश की सहायता से जीवन का अर्थ ज्ञान पाने वाले अन्वेषक अर्थ की बाह्य परिधि तक ही पहुँच पायेंगे, अन्तर का द्वार उन्हें बन्द ही मिलेगा।

वास्तविकता तो यह है कि महान् व्यक्तित्व रूपी सम्पदा के धनी अनेक गुण विभूषित श्री आनन्द कुमार आर्य एक ऐसे अर्थमय जीवन प्रधान हैं जिनके लिए शब्द ढूँढ पाना अशक्य है। क्योंकि अर्थ है ही अव्यक्त और शब्द व्यक्त हैं। व्यक्त सार्थक करने के लिए योग सामर्थ्य होगा, उतना ही साफल्य है। पर योग भी बिना तपस्या के सिद्ध नहीं होता। 'योगः कर्मसु कौशलम्' की व्याख्या सुखों में विगतस्पृह तथा दुःखों में अनुद्विग्नमन रहकर जिस महानुभाव के जीवन में आदर्श रूप में परिलक्षित होता हो तो भला मेरे जैसे साधारण व्यक्ति की भी क्या बिसात है कि ऐसे अमूर्त्त को मूर्त्त में लाने वाले कर्मयोगी के विषय में कुछ कह वा लिख सके, सिवाय इसके कि मौन होकर विनयावत होकर इन अभिनन्दनीय, वन्दनीय क्षणों में अभिनन्दन वा वन्दन ही कर लिया जावे।

श्री आनन्द कुमार जी आर्य का कोई पूर्व पुण्यकर्म विपाक ही है कि पितृपालक रूप में असाधारण दिव्य पुरुष श्री मिश्रीलाल जी आर्य की प्राप्ति हुई जिनके स्पर्श मात्र से इनके जीवन-केन्द्र में सोया हुआ प्राण समंचन प्रसारण हो उठा और उस गति-स्पंदन से सम्पूर्ण जीवन नियमों के बन्ध में बँधा हुआ स्वातन्त्र्य में आनन्द प्राप्त करता है। जैसे सितार का तार स्वर में बंधकर ही स्वतन्त्रता का आनन्द उठाता है। श्री आर्य जी के जीवन को झांक कर देखने से विदित होता है कि कर्त्तव्य की तारें तभी तक बन्धन कहलाती हैं जब तक उनका स्वर सत्य के नियमों से नहीं मिलता। कर्महीनता में शिथिल हुई तारों को हम स्वतन्त्रता नहीं कह सकते! इनके जीवन-संगीत से निकला हुआ प्रत्येक स्वर विश्वात्मा के स्वर में मिल जाता है। प्रत्येक यत्नरूपी कर्म की टेक यही रहती है कि जो कुछ भी करो ब्रह्म के अर्पण कर दो- 'ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः'। मैं समझता हूँ कि यही अर्पण-समर्पण उनकी आत्मा का संगीत है।

मित्रो! इस व्यक्तित्व का प्रत्येक कर्म ही आनन्द है या आनन्द ही कर्म है। जैसे किसी कवि का आनन्द कविता में, कलाकार का आनन्द कला में, शूरवीर का आनन्द आपने शौर्य कार्य में वैसे इस कर्मवीर का आनन्द कर्म में है।

प्रायः देखा जाता है कि सांसारिक मनुष्यों के कार्य और आनन्द में भेद देखने को मिलता है। कार्य के दिन आनन्द के दिनों से भिन्न होते हैं, इसलिए मनुष्यों को सप्ताह में एक दिन आनन्द का यानी छुट्टी का दिन मनाना पड़ता है। क्योंकि साधारण जन अपने काम में आनन्द का अनुभव नहीं करते। परन्तु श्री आनन्द जी आर्य कर्म में खो जाने के कारण कर्म सातत्य में बिना अवकाश प्राप्त किए ही आनन्द प्राप्त कर लेते हैं- अर्थात् पृथक् से आनन्द लेने के लिए अवकाश दिवस की उन्हें आवश्यकता ही नहीं पड़ती है। यह छवि उनके प्रत्येक कार्य में दृष्टव्य है। जैसे-

नदी को अपने प्रवाह में ही छुट्टी मिल जाती है, अग्नि को निरन्तर ज्वालाओं में, पुष्प को सुरभि-प्रसार में आनन्द मिल जाता है।

इस धीर-वीर, शान्त-प्रशान्त मनस्वी के अभिनन्दन में प्रत्येक आर्य को गौरव है। प्रभु इनको दीर्घायुष्य प्रदान करते हुए आरोग्य-शतायुष करे। यही कामना है।

-२४३, अरावली अपार्टमेंट्स, अलखनन्दा, नई दिल्ली

www.thearyasamaj.org

विकास पुरुष या युग पुरुष

-सबकदर आलम, एडवोकेट

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि विकास के विभिन्न आधारों में प्रमुख आधार शिक्षा है और उसमें भी महत्वपूर्ण स्थान महिला सशक्तीकरण का है। बुनकर नगरी टाण्डा के आज के विकास में महिला सशक्तीकरण का विशेष स्थान है। हमारा भारतीय समाज प्रारम्भ से ही महिला शिक्षा का विरोधी रहा। महान समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतीय समाज व देष के विकास के लिए एक महान क्रान्ति का प्रारम्भ किया, उसमें महिला शिक्षा सर्वोच्च थी और इसको अमली जामा प्रमुखता से आर्य समाज ने प्रदान किया है।

बुनकर नगरी टाण्डा में आर्य समाज की स्थापना वर्ष १८९२ में हुई। सन् १९४१ के आसपास तत्कालीन आर्य समाज के प्रधान ने विभिन्न समाज सुधारों के साथ-साथ महिला सशक्तीकरण के लिए वर्ष १९४४ में बालिकाओं की पाठशाला का प्रारम्भ किया और इस बात का उल्लेख करते हुए गौरव की अनुभूति होती है कि यह बाबू मिश्रीलाल आर्य प्रधान आर्य समाज टाण्डा की कर्मठता थी कि देश के आजादी के पूर्व ही तत्समय की उत्तर प्रदेश की सरकार की जिला परिषद ने अपनी पाठशाला बाबू मिश्रीलाल प्रधान आर्य समाज टाण्डा को प्रदान कर दिया। यह वो समय था जब कस्बा टाण्डा बुनकर नगरी होने के बाद भी गम्भीर गरीबी का शिकार रहा।

बाबू मिश्रीलाल आर्य ने यह महसूस किया कि बुनाई का कार्य गृह उद्योग के अन्तर्गत आता है और गृहणियाँ यदि शिक्षित हो गयी तो क्षेत्र का औद्योगिक विकास अवश्य होगा। उस समय समाज में महिला शिक्षा के लगभग विरोध का वातावरण था और इसमें सबसे बड़ी बाधा पर्दा व्यवस्था थी। लेकिन यह तो बाबू मिश्रीलाल जी का विकास का क्रान्ति रथ था जो रुकने वाला नहीं था। क्षेत्र की हिन्दू, मुस्लिम बच्चियों को अपने विद्यालय लायें और उन्होंने इस विद्या मन्दिर को पाठशाला से उच्चतर माध्यमिक, हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट तक बढ़ाया जिससे कस्बा टाण्डा और क्षेत्र के घर-घर में शिक्षित महिला गृहणियों को प्रयास कर कर्मठता की ओर अग्रसर किया जो आज क्षेत्रीय विकास का कारण है।

विकास का एक युग समाप्त हुआ और देश ग्लोबल विकास की तरफ अग्रसर है। बाबू जी हमारे बीच नहीं रहे। हमारा समाज उनका ऋणी है। क्षेत्र के घर-घर में उनके प्रतिनिधि के रूप में शिक्षित गृहणी महिलायें मौजूद हैं, जिनके लिए बाबू जी विकास पुरुष हैं।

जब समाज विश्व विकास की तरफ अग्रसर हो रहा था, पुरानी शिक्षा व्यवस्था चरमरा रही थी, ऐसे समय में इस उत्तरदायी संस्था का बोझ श्री आनन्द कुमार आर्य के कन्धों पर आ गया। उनके सामने इस संस्था को नई सदी में पहुँचाने का सपना था, शिक्षा नीति बदल रही थी, क्षेत्र की जनता के समक्ष एक बड़ी समस्या खड़ी थी, कि नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत कैसे अपने बच्चों को शिक्षित किया जाये जिन्हें सर्वांगीण विकास प्राप्त हो। समस्या का समाधान आया।

बाबू आनन्द कुमार आर्य ने यह कहावत चरितार्थ कर दी। **"बाढ़े पुत्र, पिता के धर्मे"** और क्षेत्र को नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत जो ग्लोबल विकास के लिए आज की आवश्यकता है, का बीड़ा तनहा अपने कन्धों पर उठा लिया। और इस कर्मयोगी ने अपने प्रयत्नों से मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज की उत्तरोत्तर प्रगति की जिसकी प्रधानाचार्या डॉ० प्रशिषा श्रीवास्तव ने साहसिक श्रम से जनपद विद्यालय को उत्कृष्ट स्थान पर पहुंचाया। प्रबन्धक महोदय ने नई शिक्षण संस्था **"डी.ए.वी.एकेडमी"** की स्थापना की जो केन्द्रीय विद्यालय के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त है। यह अकेले बाबू आनन्द कुमार आर्य प्रधान, आर्य समाज टाण्डा हैं, जिन्होंने अपने लगन से कम समय में १०+२ तक की मान्यता प्राप्त कर क्षेत्र के विकास में अपना योगदान प्रदान किया है, जिससे इस विकास पुरुष/युग पुरुष को मैं प्रणाम करता हूँ।

—मीरानपुरा, टाण्डा, अम्बेडकरनगर (उ.प्र.)

रम्य कृतित्व :सुरम्य व्यक्तित्व

-सत्यप्रकाश आर्य

श्री आनन्द कुमार आर्य जी ने आर्य समाज टाण्डा के शताब्दी समारोह को इतना सुन्दर सम्पन्न कराया था जिसकी याद लोग आज तक करते आ रहे हैं। उसमें बहुत बड़े-बड़े वेदों के विद्वान् तथा संन्यासी, महात्मा पूरे देश से पधार थे, जिसमें अमेरिका के अग्निहोत्र विश्वविद्यालय के कुलपति स्वामी सत्यम् जी तथा पं.गंगा प्रसाद उपाध्याय जी के सुपुत्र महान वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज जी भी आये हुए थे। बाबू आनन्द जी ने उस कार्यक्रम में बहुत पैसा, कई लाख रुपये खर्च किया था। मुझे ध्यान है कि आपने अपनी लाखों रुपये की एफ.डी. तुड़वा दी थी। आपके कार्य करने का ढंग बहुत ही अनुकरणीय है। विद्वानों का सत्कार बहुत ही ध्यान रखकर करते हैं। शिक्षा तथा आर्य समाज की उन्नति के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। आपका प्रयास रहता है कि आर्य विद्वानों के द्वारा विद्यालय में उपदेश वैदिक सन्देश छात्राओं को सदा मिलता रहे। आपने इसीलिए टाण्डा के प्रसिद्ध विद्वान् श्री विज्ञमित्र शास्त्री जी जो टाण्डा में ही संस्कृत के प्रवक्ता थे, सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें उपदेश के लिए निवेदन किया था जिनके द्वारा विद्यालय में बाराबर धर्मशिक्षा का सन्देश विद्यालय परिवार को मिलता रहा। श्री देव नारायण पाठक को भी इस हेतु नियुक्त किया गया है।

मेरे मन के अन्दर तमाम बातें याद आ रही हैं। श्री आनन्द कुमार जी के अन्दर सहायता करने की बड़ी भावना है। प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुँवर महिपाल सिंह कहा करते थे- 'सत्यप्रकाश, आनन्द बाबू जी ने मेरे को बचाया। मेरी बीमारी में धन की बड़ी सहायता की बड़ा ध्यान रखते हैं। महिपाल सिंह के निधन के बाद उनकी पत्नी को कैंसर हो गया। जैसे मैंने प्रधान जी को बताया तुरन्त आपने पच्चीस हजार रुपये सहायतार्थ भेज दिया। इस प्रकार कितना लोगों का उपकार किया है आपने, कहा तक वर्णन करूँ।

आनन्द बाबू की उदारता और सेवा भावना के अनेक संस्मरण मेरी स्मृति में मौजूद हैं। कुछ वर्ष पूर्व मैं एक बैठक के सिलसिले में अपने दोनों पुत्रों- आत्म प्रकाश एवं चन्द्र प्रकाश के साथ टाण्डा गया; जहाँ रात्रि में मैं एक कक्ष में ठहरा था। वहीं उन दिनों ६६ वर्षीय वयोवृद्ध श्री रामकरन तिवारी वैद्य भी रहते थे। वैद्य जी आर्य समाज के भक्त और यज्ञप्रेमी थे। उनके आगे पीछे कोई नहीं था। वृद्धावस्था में वैद्य जी के निवास और भोजन इत्यादि की सारी व्यवस्था आनन्द जी ने कर रखी थी। वार्तालाप में वैद्य जी आनन्द बाबू की सेवा-भावना का वर्णन करने लगे तो वे भावुक हो उठे और उनकी आँखों में आँसू छलछला आये। रुँधे कंठ से कहा-इतनी सेवा तो मेरी अपनी सन्तान भी नहीं कर सकती।

वेदों के महान विद्वान् क्रान्तिकारी उत्साही वक्ता जो पहले वेदी पर खड़े होकर बोलते थे, डॉ. वेद प्रकाश आर्य जी, जो आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक हैं, इसके माध्यम से पूरे देश में वैदिक नाद बजा रहे हैं। ऐसे महान् विद्वान के प्रति आनन्द बाबू के हृदय में बड़ी श्रद्धा है। श्री आनन्द बाबू ने उन्हें टाण्डा बुलाया तब डा.साहब ने मुझसे कहा मुझे रहने के लिए कमरा अलग व भारतीय पद्धति प्रसाधन, नहाने की व्यवस्था चाहिए। प्रधान जी ने कहा सब मिलेगा, कोई परेशानी नहीं होगी। जब डा.साहब ने टाण्डा आकर आर्य कन्या विद्यालय को देखा तो बोले सत्य प्रकाश, आनन्द जी ने एकदम कायाकल्प कर दिया है कितना अच्छा कमरा है, मैं साथ रहा और वापस लखनऊ आये। बार-बार फोन करके डा. वेद प्रकाश जी का समाचार लेते रहे। मैं सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक भी सभी विद्वानों का आशीष लाभ प्राप्त करता रहता हूँ।

—आवास विकास कालोनी, बाराबंकी, (उ.प्र.)

अत्यावश्यक सूचना

१. आर्य लोक वार्ता के इस विशेषांक के सम्बन्ध में अपनी सम्मति अवश्य भेजें।

२. नये वर्ष जनवरी २०१७ का अंक गतवर्ष की भाँति अंतिम पृष्ठ तिथि पत्रक के साथ एक कैलेण्डर के रूप में होगा; जिसमें होता-सदस्यों, १५०० रु से अधिक सहयोगकर्ताओं के नाम तिथिक्रम से प्रकाशित होंगे। यदि आपने अभी तक अपनी सहयोग राशि न दी हो तो अविलम्ब १० जनवरी २०१७ तक अवश्य उपलब्ध करा दें ताकि उक्त तिथि पत्रक में आपका नाम भी शामिल हो सके।

३. जिन सामान्य सदस्यों ने अपनी सहयोग राशि वर्ष २०१५-१६ में नहीं दी है; अविलम्ब उपलब्ध करा दें; जिससे उनकी प्रति का प्रेषण सुनिश्चित हो सके।

-सम्पादक

सिद्धान्त समर्पित व्यक्तित्व : श्री आनन्द कुमार आर्य

-डॉ.सोमदेव शास्त्री

३० अक्टूबर १८८३ को महर्षि दयानन्द ने अपने भौतिक शरीर का परित्याग करने से पहले वहाँ उपस्थित आर्यजनों पर दृष्टिपात करते अपने पीछे खड़े होने का आदेश दिया था। उन उपस्थित महानुभावों में गुरुदत्त विद्यार्थी भी उपस्थित थे। उस समय के दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक गुरुदत्त बन गये तथा ८ नवम्बर १८८३ को लाहौर में ऋषि को श्रद्धांजलि देते हुए ऋषि का एक स्मारक बनाने की योजना रखी कि जिससे निकला हुआ प्रत्येक विद्यार्थी ऋषि दयानन्द का स्मरण करता रहे, उसी के स्वरूप डी.ए.वी.स्कूल की स्थापना हुई जो आगे चलकर डी.ए.वी. कालेज के रूप में विकसित हुआ जो आज डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के रूप में जाना जाता हैं

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को लिखने का कार्य पंजाब के आर्यों ने गुरुदत्त विद्यार्थी को दिया, जब जब उनसे ऋषि के जीवन चरित्र के विषय में पूछा जाता कि कितना लिखा है तो यही उत्तर वे देते थे कि अपने जीवन से ऋषि का जीवन लिख रहा हूँ। अर्थात् ऋषि दयानन्द के आदर्श जीवन का अनुसरण मैं अपने जीवन में करते हुए ऋषि मिशन के कार्यों को पूरा करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। लगभग २६ वर्ष की अल्पायु में पं.गुरुदत्त विद्यार्थी वैदिक धर्म की अद्भुत सेवा करते हुए संसार से विदा हो गये। ऋषि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट वैदिक सिद्धान्तों और आदर्शों के लिये पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, महाशय राजपाल आदि हुतात्माओं ने अपने जीवन की आहुति दे दी। अनेक विद्वानों, संन्यासियों, उपदेशकों ने वैदिक मान्यताओं की रक्षा, प्रचार एवं प्रसार में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। जिसके परिणाम स्वरूप देश विदेश में हजारों आर्य समाजों की स्थापना हो गयी। लाखों की संख्या में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का प्रकाशन हो गया। ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का देश-विदेश की २४ भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो गया। विरोधियों ने सत्यार्थ प्रकाश पर आक्षेप किये जिनका करारा जवाब आर्य विद्वानों ने देकर सदा के लिये उनका मुँह बन्द कर दिया। न्यायालयों द्वारा भी विधर्मियों ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने का सन् १८९२ से २००८ तक बारह बार प्रयास किया किन्तु सदा असफल रहे, इस कालजयी ग्रन्थ को कोई भी प्रतिबन्धित नहीं कर सका, मत-मजहब और सम्प्रदायों के द्वारा फैलाये जाने वाले पाखण्ड तथा अन्धविश्वासों पर सत्यार्थ प्रकाश द्वारा किये जाने वाले प्रहारों या पाखण्डों के खण्डन का जवाब देने में कोई भी मतावलम्बी सफल नहीं हो सका।

लगभग १०० वर्ष तक सत्यार्थ प्रकाश की गरिमामय स्थिति बनी रही, जिसके द्वारा अनेक व्यक्तियों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन हुआ, अनेक क्रान्तिकारियों को देशभक्ति की प्रेरणा मिली, ३६ संस्करण १९६० तक प्रकाशित हुए। ऋषि दयानन्द के जीवन काल में जो द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ था जिसकी प्रेस कापी ऋषि दयानन्द प्रेस में भेजते रहे, उन्होंने स्वयं प्रूफ देखा, छापने का आदेश दिया, वही संस्करण सन् १९६० तक छपता रहा, जिसका २४ भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है, ऐसे सर्वमान्य ग्रन्थ को 'परोपकारिणी सभा अजमेर' ने सन् १९६१ में ३७वां संस्करण रफ कापी के अनुसार प्रकाशित कर कालजयी ग्रन्थ के साथ बहुत अन्याय किया। इसका विरोध आर्य समाजों में हुआ, विद्वानों ने लेख लिखे। डा.रामनाथ वेदालंकार ने तो यहाँ तक लिख दिया कि 'हे देव दयानन्द! तुम यदि देख पाते कि तुम्हारे सत्यार्थ प्रकाश की कैसी मट्टी पलीत हो रही है तो तुम रो पड़ते।' किन्तु परोपकारिणी सभा में बैठे एक दुराग्रही व्यक्ति ने विद्वानों की नहीं सुनी और सन् १९६१ से २०११ तक इसी प्रकार विकृत किये हुए सत्यार्थ प्रकाश के ३७,३८,३९ संस्करण प्रकाशित कर डाले। इस अन्याय को कोई रोक नही सका। तब 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली' के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य (जो आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान भी थे) ने इस दुःखद स्थिति को दूर करने का उत्तरदायित्व स्वीकार किया। १९ अप्रैल २०११ को दिल्ली में परोपकारिणी सभा के मंत्री डा.धर्मवीर जी से भेंट कर सत्यार्थ प्रकाश को विकृत न करने का आग्रह किया। २४ अप्रैल, ८ मई, २३ मई, ४ जून तथा १२ जून २०११ को पत्र लिखकर आग्रह किया कि सत्यार्थ प्रकाश के मूल रूप को सुरक्षित रखा जाय किन्तु अपने हठ और दुराग्रह का परिचय देते हुए डा. धर्मवीर ने कोई उत्तर नहीं दिया। अन्ततोगत्वा ११-१३ जुलाई २०११ को श्री आनन्द कुमार आर्य (कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) ने विद्वानों की दिल्ली में सभा बुलाई जिसमें डॉ.धर्म वीर जी को भी आमंत्रित किया गया, वे नहीं आये, जो विद्वान् गये नोटिस भेजा मुझे (सोमदेव शास्त्री को) परोपकारिणी सभा की सदस्यता से हटा दिया। सत्यार्थ प्रकाश में कोई परिवर्तन-परिवर्धन या संशोधन न हो इसके लिये श्री आनन्द कुमार जी आर्य आज भी सर्वात्मना संलग्न हैं। संकीर्ण मानसिकतायुक्त व्यक्तियों ने इन्हें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के 'कार्यकारी प्रधान' मानने से भी मना कर दिया, इनको अपने ग्रुप में नहीं मानते हैं। जबकि न्यायालय ऐसा स्वीकार नहीं करता है। फिर भी पद को ठुकराते हुए श्री आनन्द कमार जी ने सत्यार्थ प्रकाश के मूल रूप को सुरक्षित रखने हेतु जो त्याग किया यह अत्यधिक श्लाघनीय एवं अनुकरणीय है।

आदर्श पिता (बाबू मिश्रीलाल आर्य) के आदर्श पुत्र के रूप में आर्य समाज टाण्डा तथा मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, डी.ए.वी.एकेडमी (अंग्रेजी माध्यम) आदि शिक्षण संस्थाओं द्वारा वैदिक धर्म और सिद्धान्तों का प्रशिक्षण, आदर्श जीवन, संस्कारों की महत्ता, चारित्रिक मूल्यांकन हिन्दू मुस्लिम बालिकाओं को देने का प्रशंसनीय कार्य किया जा रहा है। ८० वर्ष की आयु में आज भी श्री आनन्द कुमार जी आर्य वैदिक धर्म की सेवा करने में अहर्निश संलग्न हैं जो एक अनुकरणीय एवं श्लाघनीय है।

—309, मिल्टन अपार्टमेंट, जूहू कोलिवाड़ा, मुम्बई-45

www.thearyasamaj.org

आनन्द आर्य-अमृत-अभिनन्दन-अंक

आर्य समाज टाण्डा की शताब्दोत्तर रजत जयन्ती एवं आनन्द-अमृत-जयन्ती के शुभ अवसर पर कैमरे में कैद हुए सुनहरे पल

नयनाभिराम सभा मण्डप – अनुशासित छात्राएँ

बांये से–श्री पी.एन.मिश्र, स्वामी आर्यवेश, आनन्द बाबू, सुरेश चन्द्र आर्य, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्य सोमदेव शास्त्री, विनय आर्य

चि.आदित्य का उपनयन – यज्ञाग्नि प्रज्ज्वलित है

पुष्पहारावेष्ठित आनन्द बाबू – आत्मीय जनों के मध्य

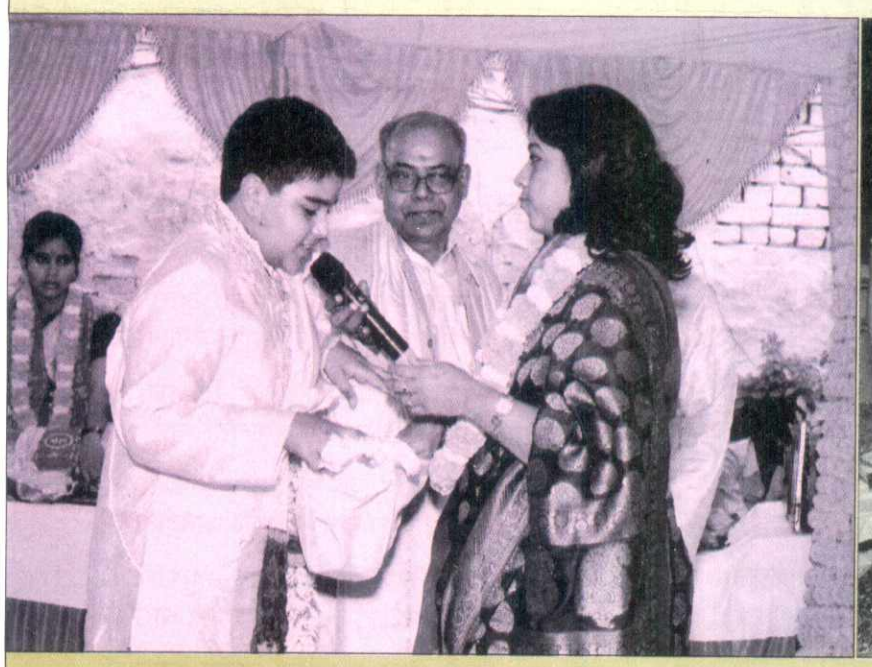

चि.आदित्य– 'माता, भिक्षां देहि', मध्य में आचार्य डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री

आनन्द बाबू एवं श्रीमती मीना जी (मध्य)– आर्य परिवार का एक मनोरम दृश्य

www.thearyasamaj.org

काव्यायन

श्रद्धा के शब्द फूल

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

आर्य समाज-संस्थापक ऋषि दयानन्द के दीवाने,
स्वातंत्र्य-समर में कूद पड़े जाने कितने ही मर्दाने।
जिन सत्याग्रही कर्मवीरों ने झेले अनगिन अशनि-शूल,
भारत माँ के उन लालों को अर्पित श्रद्धा के शब्द-फूल।।

टाण्डा के आर्य समाज प्रमुख श्री बाबू मिश्रीलाल आर्य,
कूदे आजादी-संगर में कर जेल-यातना शिरोधार्य।
जिनके प्रभाव से आर्य समाजी मंदिर में आये गाँधी,
फिर पराधीनता को निर्भय ललकार चली, मचली आँधी।।

सन उन्निस सौ चौवालिस में उस टाण्डा-योद्धा के मन में,
उत्साह जगा नव, जुटा तुरत नारी-शिक्षा-अभाव हरने।
सुस्थापित किया आर्य कन्या विद्यालय ज्ञान-प्रसार हेतु,
वह इण्टर कालेज बना आज समरसतामय सौहार्द-केतु।।

जो अनुशासन-अध्ययन-क्षेत्र में जनपद का गौरव निधान,
दो बार राष्ट्रपति-पुरस्कार से सम्मानित सुन्दर प्रमाण।
उनके सुपुत्र आनन्द आर्य, अँग्रेजी-माध्यम-शिक्षा हित,
डी.ए.वी. एकेडमी संस्था संस्थापित की फिर समयोचित।।

हिन्दू-मुस्लिम कन्या-बालक सब साथ-साथ जिसमें पढ़ते,
अँग्रेजी शिक्षा सहित आर्य संस्कारों से भविष्य गढ़ते।
साम्प्रदायिक सद्भावों की बाबू जी की ज्योतित मशाल,
लेकरके श्री आनन्द बढ़े जिसकी आभा है बेमिसाल।।

आनन्द कुमार आर्य, जो हैं अस्सी वर्षीय कर्मयोगी,
नित आर्य समाजोत्थान-निरत वे नहीं बने सुविधाभोगी।
एकता न्याय के नायक की सेवाओं का शुभ अभिनन्दन,
समता समरसता मैत्री के संचारक का शत-शत वंदन।।

जहाँ अनय का, अनाचार का होता तीव्र विरोध नहीं,
अमानुषिक व्यवहारों, अत्याचारों का अवरोध नहीं।
जहाँ लोकमंगलकारी आदर्शों का सम्मान नहीं,
जन-सेवी सत्पुरुषों का वंदन, अभिनन्दन मान नहीं।।

जहाँ पाशविक बर्बरता का आये दिन ताण्डव होता,
वह समाज, वह देश अधोमुख होकर भू-लुण्ठित होता।
अतएव सेवाव्रती कर्मवीरों का मान अपेक्षित है,
प्रेम-ऐक्य-बन्धुत्व-भावना का उद्गान अपेक्षित है।।

-78, त्रिवेणी नगर-1, डालीगंज क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ

कामना

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

प्रगति-पंथ पर अग्रसर, होवे आर्य समाज।
इस हित 'मिश्रीलाल' ने, धारा कण्टक ताज।।

'टाण्डा-आर्यसमाज' के, कर्मठ नेता आप।
आर्य समाज-प्रचार हित, सहे अमित संताप।।

कुरीतियाँ सब जन तजो, की प्रज्ज्वलित मशाल।
सामाजिक सौहार्द के, दृष्टित हुये मिसाल।।

मन में 'मिश्रीलाल' के थी इच्छा पुरजोर।
स्वतंत्रता का सर्व-मुख, करे सुहर्षित शोर।।

स्वतंत्रता-संग्राम में, भोगा कारावास।
देश-भक्ति के भाव में, पाता डर उल्लास।।

सेवक बने समाज के, करते पर हित काम।
सुख-दुख की चिन्ता नहीं, जनसेवा हर धाम।।

शिक्षित कन्या-वर्ग हो, मन में उनके चाह।
किये कर्म इस हेतु ही, भर कर उर उत्साह।।

चालित विद्यालय किया, पढ़ें बालिका आर्य।
अब इण्टर कालेज वही, दिखलाता निज कार्य।।

कार्य पिता के कर रहे, पूरित सुत 'आनन्द'।
और ख्याति भी पा रहे, जन-जन मध्य अमन्द।।

अभिनन्दन वन्दन तथा, हो कार्यों पर शोध।
व्यक्त कामना कर रहा, अपनी यही 'अबोध'।।

-'चन्द्रा मण्डप', 370/27, हाता नूरबेग, संगमलाल वीथिका, सआदतगंज, लखनऊ-03

बेटियाँ

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

(हिन्दी के प्रख्यात कवि, आचार्य, श्रेष्ठ मानव, इंसानियत के रहनुमा, 'आर्य लोक वार्ता' के प्रत्येक अंक के लिए रचना भेजने वाले डॉ.नासिर, आज हमारे बीच नहीं हैं। दि. 16.10.16 को उनका हृदयगति रुकने से आकस्मिक निधन हो गया। प्रस्तुत है श्रद्धांजलि के रूप में उनका अंतिम गजल-गीत। -सं.)

घर की शोभा बनें बेटियाँ,
फूल बनकर खिलें बेटियाँ।

मुसकुराती है मोनालिसा,
जिस जगह भी बसें बेटियाँ।

बेटियों को भी शिक्षा मिले,
है जरूरी पढ़ें बेटियाँ।

नित्य आगे ही बढ़ती रहें,
बेटों के सम ही पलें बेटियाँ।

शादियों का भी मौसम रहे,
दुलहनें भी बनें बेटियाँ।

अब न दुलहन कोई भी जले,
पी के घर खुश रहें बेटियाँ।

महफिलें नित्य सजती रहें,
जगमगाती फिरें बेटियाँ।

आसमानों से बातें करें,
चाँद छूने लगें बेटियाँ।

'दामिनी' अब न कोई बुझे,
यामिनी में हँसें बेटियाँ।

आओ!मिलकर बचायें इन्हें,
गर्भ में क्यों मरें बेटियाँ।

फूल 'नासिर' के घर भी खिलें,
आ के कुछ दिन रहें बेटियाँ।

-जी-02, लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

आनन्द-अमृत-अभिनन्दन

❑आभा मिश्रा

श्रीयुत मिश्री लाल के
सुत आनन्द कुमार।
तुमने निज पितु की तरह
किया ज्ञान विस्तार।।
इंटर कॉलेज बालिका
प्रगति पूर्ण निर्माण।
पितुवर मिश्रीलाल की
और बढ़ा दी शान।।
डी.ए.वी.एकेडमी
बुद्धि तर्क अनुसार।
वैदिक शिक्षा साथ ही
आंग्ल ज्ञान विस्तार।।
हिन्दू-मुस्लिम बालिका
शिक्षा एक समान।
आर्य संस्कृति को मिली
एक सुखद पहचान।।
आर्य जगत कृतकृत्य है
पर उपकार हितार्थ।
आर्यानन्द कुमार का
धन्य धन्य पुरुषार्थ।।

-लोकमान्य विद्या मंदिर, सआदतगंज, लखनऊ

अभिनन्दन-शुभकामना

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

अंशज मिश्रीलाल के, सुसंस्कारित आर्य।
योग्य पिता के योग्य सुत, यज्ञनिष्ठ शुभकार्य।

आर्य कर्मयोगी सफल, श्री कुमार आनन्द।
शुचि सत्यार्थ प्रकाश से, बाँटे परमानन्द।

दयानन्द ऋषि-भाव से, तन मन ओतप्रोत।
टाण्डा नगरी को दिए, शिक्षा के नवस्रोत।

डी.ए.वी. के नाम से, खोले शैक्षिक-केन्द्र।
टाण्डा में नवज्योति सम, हैं 'आनन्द' नरेन्द्र।

आर्य समाज सुवास को, करो प्रसारित और।
जनसेवा-सद्भाव से, बनो राष्ट्र सिरमौर।

हिन्दू-मुस्लिम मध्य हो, सामाजिक सद्भाव।
शिक्षा पा 'आनन्द' से, बढ़े राष्ट्र प्रति चाव।

प्रभु से सादर प्रार्थना, रहें स्वस्थ सानन्द।
ज्ञानज्योति अक्षुण्ण रखें, श्री कुमार आनन्द।

-117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-226 022

नमन और वन्दन

❑गमा आर्य 'गमा'

शत शत नमन और वन्दन है।
आनन्द आर्य का अभिनन्दन है।

बाबू मिश्रीलाल आर्य की, समरसता और एकता का,
तपो भूमि यह टाण्डा है। विद्यालय एक प्रमाण हुआ।
जहाँ ऋचाओं के गुंजन की, जहाँ शिक्षिकाओं का भी,
फहरी कीर्ति पताका है।। राष्ट्रीय सम्मान हुआ।।

आर्यव्रती धरती क्षमता को, दिल्ली और कोलकाता को,
गाँधी जी ने पहचाना था। जिनपर सदैव अभिमान रहा।
स्वाधीन देश की मशाल लेकर, सम्मेलन और समारोहों में,
हुआ अतः उनका आना था।। सहभाग कहीं प्रतिभाग रहा।।

स्वतंत्रता के महा समर में, तन मन किया निछावर अपना,
थी टाण्डा ने की अगुवाई। अमिय पिला विषपान किया।
निकल पड़े थे शीश चढ़ाने, लगन कर्म निष्ठा में अपनी,
ऋषि दयानन्द के अनुयायी।। जाति धर्म का मान जिया।।

नारी शिक्षा के हित में है, जिनकी गौरव गरिमा से,
विद्यालय का निर्माण किया। टाण्डा समाज है धन्य हुआ।
बढ़ते रहे लक्ष्य के पथ पर, शताब्दोत्तर रजत जयन्ती,
तन मन धन है वार दिया।। महा पर्व सम्पन्न हुआ।।

मिश्रीलाल आर्य जी के हैं, आह्लादित हो जनमन सारा,
ज्येष्ठ पुत्र कुल मान हुए। करता नमन और वन्दन है।
चले पिता के पद चिन्हों पर, पावन पर्व महा बेला में,
आनन्द आर्य प्रतिमान हुए।। आनन्द आर्य को अभिनन्दन है।।

-'आश्रयधाम', 417/10, निवाज गंज, चौक, लखनऊ

मंगलकामनाएँ

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

आर्यवर आनन्द बाबू पुत्र मिश्री लाल के,
धाम टाण्डा नगर व्यवसायी मगर बंगाल के।

राजधानी नई दिल्ली कार्यक्षेत्र विशाल है,
सार्वदेशिक सभा से जिनका समुन्नत भाल है।।

अमिताभ और मनीष जिनके पुत्रद्वय विख्यात हैं,
श्रीमती मीना आर्य जीवन संगिनी अवदात है।

पूर्ण जीवन के किये अस्सी सुखद मधुमास हैं,
आर्यजनता के हृदय में जिनके सुयश का वास है।

भर रहा अपने हृदय मं मुदित मानस भावनाएँ,
'हर्ष' अर्पित कर रहा है, मधुर मंगलकामनाएँ।।

-अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

www.thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

श्री आनन्द कुमार आर्य जी से मेरा

कई दशकों पुराना सम्बन्ध है। वे पुरानी पीढ़ी के आर्य समाजी हैं। उनके पिता श्री मिश्रीलाल आर्य ने १९४४ में आर्य कन्या पाठशाला स्थापित की थी जो कि वर्तमान में एक वटवृक्ष के रूप में 'मिश्री लाल आर्य कन्या इन्टर कॉलेज' के नाम से कार्यरत है। अब वर्तमान में श्री आनन्द कुमार आर्य मेरे पुत्र अजय सहगल के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी दीर्घायु हो और उनका परिवार फले फूले ताकि वे इसी तरह आर्य समाज एवं आर्य समाज से जुड़ी संस्थाओं की की सेवा करते रहें। मेरी शुभकामनायें सर्वदा उनके साथ हैं।

-रामनाथ सहगल
आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

***

सहृदयता, मानवता एवं प्रतिभा के

अद्भुत संगम श्री आनन्द कुमार जी, महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाते हुए तथा उनके नारी शिक्षा के उद्घोष को साकार करते हुए कई कन्या विद्यालयों का संचालन कर रहे हैं। श्री आनन्द कुमार जी आर्य से मेरा अत्यंत आत्मीय सम्बन्ध है। जब से वे मेरे नजदीक आये हैं, मैं उनकी शालीनता, सौम्यता और ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति उनके समर्पण से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ। मेरा विश्वास है कि वे अपने गुणों, कृत्यों और अनुभवों के द्वारा बढ़-चढ़कर आर्य समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करते रहेंगे। उनके नेतृत्व से आर्य समाज को विशेष ऊर्जा एवं शक्ति मिलती रहे ऐसी हमारी इच्छा है। परम पिता परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि वे अदीन व स्वस्थ रहते हुए शतायु हों और वैदिक धर्म, संस्कृति एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्राणप्रण से लगे रहें।

-स्वामी आर्यवेश सभा प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

***

उ.प्र.के जिला अम्बेडकरनगर, टाण्डा

के आर्य तपस्वी श्री मिश्रीलाल आर्य जी के परिवार में माता श्रीमती रामप्यारी जी ने एक अति सुन्दर पुष्प को पुष्पित किया। सब ओर आनन्द ही आनन्द था इस कारण आपका नाम माता रामप्यारी जी ने बड़े प्यार से आनन्द कुमार रखा। माता-पिता के सान्निध्य में टाण्डा में ही आपका लालन-पालन हुआ। देखते ही देखते बालक आनन्द कुमार ने प्रारम्भिक शिक्षा की सीढ़ियों को सफलता के साथ पार करते हुए माध्यमिक शिक्षा की ओर अपने कदम बढ़ा दिये। आनन्द जी को वैदिक ज्ञान तो अपने माता-पिता से विरासत में ही प्राप्त हो गया था इस कारण आर्य सेवा उनके अन्दर कूट कूट कर भरी हुई थी। समाज सेवा के साथ ही आपने अपने पिता के व्यवसाय में सहयोग करना अपना धर्म समझा और पिता के व्यवसाय में रम गये। आपने अपना अधिकांश समय आर्य समाज के उत्थान के लिए अर्पित किया। वर्ष १९९० में आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य बने और समाज सेवा में पूर्णतः समर्पित हो गये। आपकी सेवा भावना ने ही आपको वर्ष १९९९ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का उपप्रधान बना दिया। वर्ष २००१ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान पद पर रहते हुए समाज के हित के लिए अनेकों कार्य किये। वर्ष २००४ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान संगठन का कार्यभार संभाला।

आपने पूर्वोत्तर राज्यों के प्रभारी पद पर रहते हुए आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाई। आप बिहार, झारखण्ड, असम, उ.प्र. में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में विख्यात हुए। आपने पिताश्री द्वारा स्थापित श्री मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। २५ वर्षों तक निरन्तर आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के मंत्री पद को भी सुशोभित कर वहां के युवाओं के मन में आर्य समाज के बीजों को रोपित किया। आपने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को समय समय पर मार्गदर्शन के साथ साथ अपना अपूर्व सहयोग प्रदान किया जिसके लिए सभा के समस्त पदाधिकारी आपके चिरऋणी हैं।

-विनय आर्य महामंत्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

***

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के

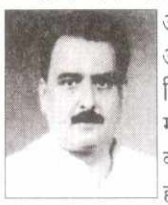

अनुयायियों में अग्रगण्य स्व.बाबू मिश्री लाल जी ने महर्षि की शिक्षाओं को आत्मसात् करते हुए आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की तथा स्त्रियों की शिक्षा के अभाव को दूर करने का प्रभावशाली कार्य किया है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य जी ने डी.ए.वी.एकेडमी की स्थापना करके साम्प्रदायिक सामंजस्य को वैदिक संस्कृति के बल पर आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं जो कि सराहनीय व प्रशंसनीय है।

-देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ

***

श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपनी ८० वर्ष की उम्र में भी आर्य समाज और स्वामी दयानन्द के बारे में ही सोचा और किया है और वर्तमान में भी आर्य समाज और दयानन्द का ही कार्य कर रहे हैं। आपने वर्षों तक बंगाल प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को सुशोभित किया है और बंगाल के सभी समाजों को अपने जीवन से ऊर्जा दी है और अभी भी दे रहे हैं। संगठन को मजबूती दी है। बंगाल प्रतिनिधि सभा के भवन का अपने निर्माण कराया जो कि अन्य कोई नहीं करा सकता था और आर्य समाज बड़ा बाजार की भूमि को खाली कराने में आपका सहयोग सराहनीय है। आप वर्षों तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान रहे हैं और सार्वदेशिक सभा को नई दिशा प्रदान की है। समाजों में जहाँ भी बुराई दिखाई दी वहीं पर आपने ढाल की तरह डटकर मुकाबला किया और बुराइयों को दूर कराया है। वर्तमान में सत्यार्थ प्रकाश जो कि आर्य समाज के प्राण हैं उसमें आई विसंगतियों को

दूर कराने में अग्रणी होकर कार्य कर रहे हैं। टाण्डा में आपके पिताश्री मिश्रीलाल जी द्वारा स्थापित आर्य कन्या इन्टर कालेज के वार्षिक उत्सव में गत कई वर्ष पहले मैं गया था वहाँ जाकर जो देखा ऐसा कहीं नहीं देखा। उस शिक्षा संस्थान में मुस्लिम परिवारों की भी ७००-८०० कन्यायें पढ़ती हैं और शिक्षा संस्था में वेदमंत्रों द्वारा अपनी आहुति दे रही हैं। वहां कोई भेद-भाव नहीं है। बुर्का पहनकर घर से आती हैं, स्कूल में आकर स्कूल यूनीफार्म में रहकर पढ़ाई कर रही हैं। शिक्षा संस्था के सभी नियमों को मानते हुए पढ़ाई और खेलकूद में बराबर हिस्सा ले रही हैं। यह अपने आप में एक मिसाल है। ऐसे कर्मयोगी का मैं नमन करता हूँ और अपनी तरफ से ये दो शब्द लिख कर भेज रहा हूँ। आशा है अन्य पढ़ने वालों को ऊर्जा मिलेगी और आर्य समाज की विचारधारा को बढ़ाने में सफलता मिलेगी।

-दीनदयाल गुप्त चेयरमैन
डॉलर इन्डस्ट्रीज लिमिटेड, कोलकाता

***

श्री आनन्द कुमार आर्य ने सम्पूर्ण

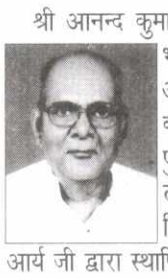

भारत वर्ष के समस्त आर्यों को संगठित करने का भागीरथ पुरुषार्थ किया है। टाण्डा में अपने पिता स्व.मिश्रीलाल आर्य जी द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान को सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाकर मुस्लिम परिवार में भी वेद और महर्षि दयानन्द के संदेशों को पहुँचाया है। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना की ओर से हम उनका अभिनन्दन करते हुए परम पिता परमात्मा से स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं। आशा है इससे प्रेरित होकर अन्य आर्य जन भी आर्य समाज की सेवा में अग्रसर होंगे।

-रमेन्द्र कुमार गुप्ता मंत्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
नया टोला, पटना (बिहार)

***

मुझे टाण्डा आर्य समाज के उत्सव

में अनेकों बार जाने का अवसर मिला। मैंने ८० के दशक में यह भी देखा किस प्रकार एक स्थानीय विद्वान् मौलवी उत्सव के समय पाण्डाल में आते थे तथा पं. शान्ति प्रकाश जी आदि विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ का कुतूहल उत्पन्न करते थे। उन दिनों टाण्डा में शास्त्रार्थ का यह कार्यक्रम बहुत चर्चित रहता था। कारण यह कि तब तक आर्य समाजों में शास्त्रार्थ की प्रवृत्ति प्रायः समाप्त हो चुकी थी। अतः ऐसे शास्त्रार्थ को देखने सुनने के लिए स्थानीय जनता बहुत आती थी।

बाबू मिश्रीलाल के दिवंगत होने के बाद भी उनके कार्यों को उनके योग्य पुत्र माननीय बाबू आनन्द जी ने पर्याप्त आगे बढ़ाया है। प्रांगण में दर्शनीय यज्ञशाला के साथ ही आधुनिक पद्धति से अंग्रेजी माध्यम से आधुनिक शिक्षा का श्रीगणेश करके शिक्षा क्षेत्र में अभिनव योगदान किया है। सार्वदेशिक स्तर पर आर्य समाज टाण्डा की पहचान माननीय आनन्द जी के ही कारण है। अनेक वर्षों तक सार्वदेशिक सभा में उपप्रधान एवं कार्यकारी प्रधान के रूप में कार्य करते हुए तथा बंगाल प्रतिनिधि सभा का कार्य देखते हुए वहाँ से लगभग ७०० किलोमीटर दूर तथा मुख्य सड़क मार्ग एवं रेलमार्ग से भी कटे हुए इस कस्बे में आर्य समाज को गतिविधि प्रदान करना तथा कन्या इन्टर कालेज के प्रबंधन का कार्य देखना आसान नहीं है। उनकी कर्मठता एवं सक्रियता देखकर मुझे आश्चर्य ही होता है।

-डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री
बी-29, आनन्द नगर, जेल रोड, रायबरेली

***

सफेदपोश में कोई संन्यासी देखने की

किसी को ललक हो तो वह हमारे आर्यकुलरत्न आनन्द बाबू को देखे। मानव कल्याण, अज्ञानता का नाश इस परिवार की संस्कृति और परम्परा का प्रधान ध्येय है। आर्य परम्परा राष्ट्रीय जीवन में प्राण फूँक कर सामाजिक व्यक्तित्व का विकास करती है। यह परिवार ही पूरा राष्ट्रीय आदर्शों एवं विश्वासों का रक्षक है। आर्य संस्कृति जन कलयाण के लिए घटित क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तनों की वाहिका है। वैदिक संस्कृति ही राष्ट्रीय जीवन, सामाजिक मर्यादा एवं प्रगतिशील विचारों का बोधक तथा विश्व का अमूल्य वैभव है। आनन्द बाबू के स्वभाव में शाश्वत एवं सनातन की अभिव्यक्ति उजागर होने के कारण संकीर्णता की बू तक नहीं है।

त्याग और तपस्या की साक्षात् प्रतिमा आदरणीय आनन्द कुमार आर्य जी सदैव स्वस्थ ओर प्रसन्न रहकर हमारे प्रेरक बने रहें- यही सदभिलाषा है।

-आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र
आर्य समाज, डी-ब्लाक मार्किट, साउथ एक्सटेंशन-1, नई दिल्ली

***

मेरे पूज्य पिता जी श्री ओजोमित्र

शास्त्री जी हमेशा आनन्द बाबू के कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहते थे कि मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कॉलेज टाण्डा एक गुरुकुल से बढ़कर है, जहाँ प्रत्येक शनिवार को यज्ञ विद्यालय में होता हो, छात्रायें यज्ञ करती हों, आर्यमय वातावरण हो वो कितना अच्छ कार्य है। श्री आनन्द कुमार आर्य जी जिनका मुझे हमेशा स्नेह व आशीष मिलता रहता है, मैं उनकी लम्बी आयु, स्वस्थ जीवन से वैदिक धर्म की उन्नति हेतु प्रभु से प्रार्थना करता हुआ धन्यवाद करता हूँ।

-सत्य प्रकाश आर्य
प्रधानाध्यापक, माधवपुर, बाराबंकी

***

श्री आनन्द कुमार आर्य एक महान् वैदिक शिक्षाविद्, वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता तथा आर्य समाज को पूर्ण रूपेण समर्पित व्यक्ति हैं। श्री आनन्द कुमार आर्य को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त है तथापि उनकी सफलता, विनम्रता और सादगी मुझे प्रभावित करती रही है। मैं प्रायः जब भी वे दिल्ली या कोलकाता में रहते हैं उनसे वार्ता करने का प्रयास करता हूँ

क्योंकि उनके मुख से निकले हुए शब्दों को सुनकर मुझे आत्मिक सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है। उनका शिक्षा के क्षेत्र का कार्य इतना महान है कि उनके जैसा महान शिक्षाविद् और कर्मवीर मैंने जीवन में नहीं देखा।

कुछ वर्ष पूर्व आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा सम्पादित 'बाबू मिश्रीलाल आर्य : एक प्रेरक व्यक्तित्व' स्मृतिग्रंथ मुझे प्राप्त हुआ था। मैं उस ग्रंथ को बार बार पढ़ता हूँ और एक योग्य पिता के योग्य पुत्र के रूप में आनन्द कुमार का परिचय मुझे आह्लादित कर देता है। श्री आनन्द कुमार आर्य से मेरा साक्षात्कार आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोहों में प्रायः होता रहा है। उनके नपे तुले शब्द और सार्थक सटीक वाक्यों को सुनकर मुझे कर्तव्य पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा मिलती है।

-पाल प्रवीण
एम.एस.120, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और महर्षि

स्वामी दयानन्द सरस्वती के निष्ठावान् कार्यकर्ता स्व.मिश्रीलाल आर्य में आर्य समाज टाण्डा (अम्बेडकरनगर) तथा स्वस्थापित आर्य कन्या इन्टर कालेज के साथ समाज सेवा का जो महनीय कार्य किया था, उसकी सुगंधि आज पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश में व्याप्त है। उनके योग्य पुत्र कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य उनके वरेण्य उत्तराधिकारी हैं। उन्होंने शिक्षा और समाज के लिए वैसा ही समर्पित जीवन बिताने का व्रत लिया और आज ढ़लती उम्र में भी वे अनवरत सेवा में लगे हैं। मैं इस मंगल संकल्प के लिए अपनी शुभकामना भेजकर धन्यता का अनुभव कर रहा हूँ।

-डॉ.कन्हैया सिंह
पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, भाषा संस्थान, लखनऊ

***

मिश्रीलाल आर्य कन्या पाठशाला की

स्थापना आपके परिवार ने ही की, बाबू मिश्रीलाल जी आपके पूज्य पिता जिनका योगदान महत्वपूर्ण है। आजादी के पूर्व आर्य समाज का निर्माण करना, पाठशाला के बारे में सोचना भी बहुत कठिन था, मैं आपकी पाठशाला एवं कॉलेज देख चुका हूँ। विद्यालय का अनुशासन, अध्ययन लोगों में प्रमुख स्थान रखता है इसीलिए दो प्रधानाचार्यों को राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हो चुका है यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। हिन्दू मुस्लिम बालिकाएँ जिनमें वैदिक संस्कृति, सभ्यता, संस्कार देखने को मिलते हैं। यह पौधा भले ही बाबू मिश्रीलाल जी ने लगाया था जिसे निरन्तर सींचने का कार्य श्री आनन्द कुमार आर्य कर रहे हैं। आनन्द कुमार जी ८० वर्ष की आयु में भी आर्य समाज का कार्य बहुत उत्साह और जोश के साथ कर रहे हैं।

-अरुण कुमार अबरोल मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

www.thearyasamaj.org

आनन्द आर्य-अमृत-अभिनन्दन-अंक

A TRUE KARAMYOGI

Similarly during these crucial days Arya Samaj when so many so called self-styled champion scholars and publishers have made and making extensive corruption, distortion, mutilations, interpolations, modifications, revisions, omissions, enlargements, deletions, additions and alterations in the Original work "Satyarth Prakash" of the Maharshi ji i.e. its 2nd Edition published in 1883-84 and thereby have changed and changing expression of his view and thought; **Karmyogi Sri Anand Kumar Arya without calculating his personal benefit or loss has waged a crusade on social, academic and legal front with sole motive and intent to protect, prevent and preserve Original form of one of the greatest creations of the human mind and a beacon across the word.**

It is very difficult for a man to fight on three front at a time only parallel in modern history are Maharshi Dayanand Saraswati ji maharaj and "Iron Chanceller" Otto von Bismarck (1815-1898) who initiated decisive wars with Denmark, Austria and France opening three fronts at a time to unite 39 independent German States under Prussian leadership and thereby made his nation world power. Anand Babu being Working President of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, Caption Faction is also making vigorous efforts for unification of all three factors of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha.

-P.N. Mishra

Leading Lawyer, Supreme Court Bharat

कर्मयोगी-जीवन के प्रमुख बिन्दु

पारिवारिक

जन्म – 09.11.1936, टाण्डा (उ.प्र.)
माता – श्रीमती रामप्यारी देवी
पिता – श्री मिश्रीलाल आर्य
पत्नी – श्रीमती मीना आर्य
शिक्षा – स्नातक उपाधि (1955) लखनऊ वि.विद्यालय
व्यवसाय– कोलकाता (प.बंगाल)
पुत्री – मीता आर्य, ममता आर्य
पुत्र – मनीष आर्य, अमिताभ आर्य

शैक्षिक

मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज टाण्डा
डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा
डी.ए.वी. भवानीपुर प.बंगाल

समाजिक

आर्य समाज टाण्डा उ.प्र.
आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल–आसाम
आर्य समाज बड़ा बाजार, कोलकाता
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सम्मेलन

आर्य समाज टाण्डा शताब्दी समारोह टाण्डा, उ.प्र.
मिश्रीलाल आर्य जन्म शताब्दी महोत्सव, टाण्डा, उ.प्र.
आर्य महासम्मेलन हरिद्वार उत्तराखण्ड
अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन, नई दिल्ली
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह, दिल्ली
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मॉरीशस

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय–19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ–226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 9198080000

नवोन्मेष
कृष्णा जी. पिंटेक
E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि
सामान्य सदस्य – 100 रु. वार्षिक
होता सदस्य – 1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक – 15,000 रु.
प्रतिष्ठापक – 50,000 रु.

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

(1) बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार–बचत खाता

(2) बैंक–इलाहाबाद बैंक, ए–869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO211122
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 5022 3541 717
खाते का प्रकार–बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ

परामर्श एवं सहयोग
श्रीमती प्रियंका शर्मा, लखनऊ
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
श्रीमती रमा आर्य 'रमा' लखनऊ
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में